२|९|२२

प्रश्न:- (1) १६/८/२०

~~[illegible]~~ अध्याय

B.A. / B.Sc.

भाग I

हिन्दी [illegible] –

डॉ॰ अंजना कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग,
[illegible] कॉलेज,
[illegible],

सूर के पद की व्याख्या –

ऊधो मोहि ब्रज बिसरत नाहीं की व्याख्या

सन्दर्भ — प्रस्तुत पद में ब्रज भूमि के प्रति कृष्ण के प्रेम को दर्शाया गया है।

प्रस्तुत पद के अनुसार कृष्ण ब्रज की मधुर स्मृतियों [illegible] एवं घटनाओं को [illegible] याद करते हुए भावुक एवं प्रसन्नता से कहते है। ब्रज का अपने यहाँ प्रेम की अनुभूति है।

प्रथम पंक्ति में यमुना का मनमोहक किनारा तथा उसके किनारे कुंजों [illegible] लताओं की छाया को कृष्ण अभी तक नहीं भूल पाये हैं। उनका मन अभी भी वहीं रमा हुआ है। वो वृन्दावन की गाय-दोहनी में एक [illegible] का दर्शन है जब गोपियों में कृष्ण गाय दुहते थे तथा ग्वाले बछड़े को पकड़ते थे। इसी क्रम में एक बार माता के [illegible] में बैठे थे तथा एक बार दोहनी में बैठे थे। गाय दुहने के क्रम में प्रेम की [illegible] कर कृष्ण बछड़े को दूध पिलाते हैं। एक [illegible] में कृष्ण को पता ही नहीं चलता है कि वो गाय दुह रहे हैं या बछड़ा। बछड़े द्वारा [illegible] की घटना कृष्ण

प्रश्न :-